بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 06

राह-ए-ईमान

जून
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक काव्य रचना.....7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 3.5.2024).....8
8. मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व.....12
9. जमात अहमदिया की बैअत करने वालों के लिए निर्देश.....21
10. मोमिन की फिरासत से बचो.....29
11. सामान्य ज्ञान.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

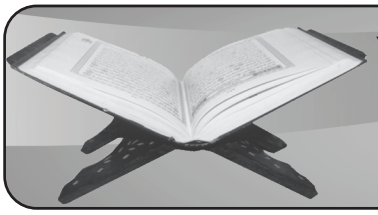

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

अनुवाद:- 36- हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने अर्थात् उस तक पहुँचने की राहों को तलाश करो तथा उस की राह में कोशिश करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

37- जो लोग इन्कार करने वाले हैं यदि धरती में जो कुछ पाया जाता है वह सब और उतना ही उस के साथ और (धन) भी उन के पास होता कि वे क़ियामत के दिन के अज़ाब के बदले में उसे दे देते तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जाता और उन के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब निश्चित है। (अल माईदा : 36-37)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत इमरान बिन हुसैन वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक व्यक्ति उपस्थित हुआ और उसने अस्सलामो अलैकुम कहा आपने इसके सलाम का जवाब दिया। जब वह बैठ गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि व्यक्ति को दस गुना सवाब मिला है। फिर एक और व्यक्ति आया उसने "अस्सलामो अलैकुम वरहसतुल्लाह" कहा। हुज़ूर ने सलाम का जवाब दिया। जब वह बैठ गया तो आपने फ़रमाया- इस को बीस गुना सवाब मिला है। फिर एक और व्यक्ति आया उसने "अस्सलामो अलैकुम वरहसतुल्लाह व बरकातुहू" कहा। आप ने इन्हीं शब्दों में जवाब दिया। जब वह बैठ गया तो आपने फ़रमाया - इस व्यक्ति को तीस गुना सवाब मिला है। (तिर्मिज़ी अबवाबुल इस्तैयज़ान)

अनुवाद- हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया- हे मेरे बेटे! जब तुम घर जाओ तो सलाम कहो इस तरह तुझे भी बरकत मिलेगी और तेरे परिवार को भी। (तिर्मिज़ी किताबुल इस्तैयज़ान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

धर्म को दुनियादारी पर प्रधानता दें

मेरा यह मतलब कदापि नहीं कि मुसलमान सुस्त हो जाएं। इस्लाम किसी को सुस्त नहीं बनाता। अपने व्यापार और नौकरियां भी करें। लेकिन मैं यह नहीं पसंद करता कि ख़ुदा के लिए उनका कोई वक़्त भी ख़ाली न हो। हां व्यापार के समय पर व्यापार करें और अल्लाह के तक़्वा को उस समय भी दृष्टिगत रखें ताकि वह व्यापार भी उनकी इबादत का रूप धारण कर ले। नमाज़ों के वक़्त नमाज़ों को न छोड़ें। हर विषय में चाहे कोई भी हो दीन को प्रधानता दें। दुनिया कमाना मुख्य चाहत न हो। असल चाहत दीन हो फिर दुनिया के काम भी दीन ही के होंगे। सहाबा किराम को देखो कि उन्होंने मुश्किल से मुश्किल समय में भी ख़ुदा को नहीं छोड़ा। लड़ाई और तलवार का समय ऐसा ख़तरनाक होता है कि उसके सोचने से ही इन्सान घबरा उठता है। वह समय जबकि जोश और ग़ुस्से का होता है ऐसी हालत में भी वे ख़ुदा से ग़ाफ़िल न हुए। नमाज़ों को नहीं छोड़ा। दुआओं से काम लिया। अब यह बदक़िस्मती है कि यूं तो हर तरह से ज़ोर लगाते हैं, बड़ी-बड़ी तक़रीरें करते हैं, जलसे करते हैं कि मुसलमान तरक़्क़ी करें, लेकिन ख़ुदा से ऐसे ग़ाफ़िल हुए हैं कि भूलकर भी उसकी ओर ध्यान नहीं देते। फिर ऐसी हालत में क्या उम्मीद हो सकती है कि उनकी कोशिशें सफल हों जबकि वे सारी की सारी दुनिया कमाने के लिए ही हैं। याद रखो जब तक ला इलाहा इल्लल्लाहो ख़ून में न रच-बस जाए और जिस्म के कण-कण पर इस्लाम की रौशनी और हुकूमत न हो कभी तरक़्क़ी न होगी। यदि तुम पश्चिमी लोगों की मिसाल प्रस्तुत करो कि वे तरक़्क़ियां कर रहे हैं (तो सुन लो कि-अनुवादक) उनके लिए अलग बर्ताव और बदले का दिन है। तुम अगर किताबुल्लाह को छोड़ोगे तो तुम्हारे लिए इसी दुनिया में जहन्नुम (नर्क) मौजूद है।

ऐसी हालत में कि लगभग हर शहर में मुसलमानों की तरक़्क़ी के लिए अंजुमनें और कॉन्फ्रेंसे होती हैं। लेकिन किसी हमदर्द-ए-इस्लाम के मुंह से यह नहीं निकलता की क़ुरआन को अपना इमाम बनाओ, उसका पालन करो यदि कहते हैं तो बस यही कि अंग्रेजी पढ़ो, कॉलेज बनाओ, बैरिस्टर बनो। इससे मालूम होता है कि ख़ुदा पर भरोसा नहीं रहा। कुशल चिकित्सक भी दस दिन के बाद अगर दवा फ़ायदा न करे तो अपने इलाज से तोबा कर लेते हैं। यहां नाकामी पर नाकामी होती जाती है और उससे तोबा नहीं करते। अगर ख़ुदा नहीं है तो उसको छोड़ कर अवश्य तरक़्क़ी कर लेंगे। लेकिन जब ख़ुदा है और अवश्य है तो फिर उसको छोड़ कर कभी तरक़्क़ी नहीं कर सकते। उसका अपमान करके उसकी किताब का अपमान करके चाहते हैं कि कामयाब हों और एक क़ौम बन जावें कभी नहीं। हमारी राय तो यही है कि जिसको आंखें देखती हैं कि तरक़्क़ी की एक ही राह है कि ख़ुदा को पहचानें और उस पर जिंदा ईमान पैदा करें।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मैंने यह क़सम खा रखी थी कि केवल अहम (मुख्य) मामले की ओर ही ध्यान दूंगा तथा बहस-मुबाहस: में समय नष्ट नहीं करूंगा। मैं ने उस व्यक्ति (रुसुल बाबा) की पुस्तक को मूर्खतापूर्ण बातों और बकवासों से भरा हुआ तथा मानसिक गिरावट की प्रकृति का संग्रह और दुर्भाग्यपूर्ण स्वभाव से मिश्रित पाया। और इसलिए मेरी फ़ुर्सत के अभाव और मेरे बड़े हौसले ने मुझे इस बात से रोके रखा कि मैं इस कीड़े के ख़ून से अपने हाथों को गन्दा करने और मूल उद्देश्य से दूर हो जाऊं। किन्तु मैंने देखा कि यह व्यक्ति अपने इनाम के प्रस्ताव से और डींगे मारने से असम्य उजड्ड वर्ग को धोखा दे रहा है और यही कि यदि हम खामोश रहे तो निस्सन्देह अपने अपराधों में और बढ़ जाएगा तथा निरुत्तर करके अपने झूठे दावे से लोगों को धोखा देगा और यह कि शिकार जाल में फंस चुका है, तो हमने यही उचित समझा कि उस (शिकार) को पकड़ कर भूखों के लिए ज़िब्ह कर दें और यह कि वह टिड्डी-दल की तरह उड़ रहा है ताकि वह लोगों के प्रतिपालक (रब्ब) की खेती चट कर जाए। तो मैंने सच्चाई के झरने और उसके जारी पानी के समर्थन में यही उचित समझा कि हम उस टिड्डी तथा उसके बच्चों का शिकार करें और बेईमानी के कपट से ख़ुदा की प्रजा को मुक्ति (निजात) दें। अत: उस हस्ती की क़सम! जिसने हमें प्रेम से सम्मानित किया और अपने प्रियजनों की सहायता के लिए बुलाया। कि हमें इस व्यक्ति के अनुदान और पुरस्कारक में कोई रूचि नहीं बल्कि हम उसे उसके बेहूदा कलाम की तरह बेहूदा ही समझते हैं। हम तो केवल यही चाहते हैं कि उसको उसके अपराध का दण्ड दिखा दें ताकि कुछ पक्षपाती मूर्ख धोखा न खाएं।

अत: हे वह व्यक्ति जिसने यह पुस्तक लिखी है और जो हम से उत्तर मांगता है तुझे ज्ञात हो कि हम यह इच्छा लेकर तेरे पास आए हैं कि तेरे तर्कों को ध्यान पूर्वक सुनें और तुझे तेरी तबाही की शाबाशियों से बचाएं तथा तेरी कमीनगियों की जड़ काट के रख दें और तुझे बता दें कि तू दोषी है और यह तो तू जानता ही है कि सबूत देने का भार हम पर नहीं बल्कि उस पर है जो मसीह के जीवित रहने का दावेदार है और यह कहता है कि ईसा मरे नहीं और न ही मुर्दों में सम्मिलित हैं। तर्कों के बिना अपवाद की पद्धति को ग्रहण करने के दावे की वास्तविकता ऐसी ही निराधार रायों का पता देतीं हैं। मेरा तात्पर्य यह है कि बहुत सी चीज़ों का एक आदेश में लाना और फिर उसमें से किसी चीज़ को बाहर करने और सबूत के कारण के बिना उस से बाहर कर देना यह ऐसी परिभाषा है जिसका न तो कोई बच्चा इन्कार कर सकता है और न ही मूर्ख, सिवाए उस व्यक्ति के जो उन्मादियों जैसा पक्षपात रखता हो।

फिर जब यह बात ठोस तौर पर सिद्ध हो गयी तो हम कहते हैं कि जब हम उस युग पर दृष्टि डालते हैं जिसमें मसीह अलैहिस्सलाम अवतरित किए गए तो हमारी सही दृष्टि इस बात

की गवाही देती है कि आप के युग के समस्त लोग, चाहे आप अलैहिस्सलाम के शत्रु हों या मित्र हों, पड़ोसी हों, भाई हों, यार-दोस्त हों, खालाएँ (मासियाँ) हों, माएं हों, फुफियाँ हों और बहनें हों तथा वे सब जो उन क्षेत्रों, शहरों और आबादियों में रहते थे वे सब के सब मर गए थे और उनमें से किसी को भी हम इस युग में (जीवित) नहीं देखते। अत: जो कोई यह दावा करे कि उनमें से ईसा जीवित बच गए थे और मुर्दों में सम्मिलित नहीं हुए तो उसने उन्हें अपवाद ठहराया। तो उस पर अनिवार्य है कि वह इस दावे का सबूत दे। और तुम जानते हो दावा करने वालों के दावे के सबूत के लिए हनफियों के नज़दीक सबूतों के चार प्रकार हैं जो विचारकों से छिपे नहीं।

प्रथम- قَطْعِيُّ الثُّبُوْتِ وَالدَّلَالَةِ (ठोस सबूत और निशान)-जिसमें किसी प्रकार की कमज़ोरी और दोष न हो जैसे स्पष्ट क़ुर्आनी आयतें तथा सही एवं निरन्तरता वाली हदीसें। इस शर्त के साथ कि वे तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हट कर व्याख्या करना) करने वालों की तावीलों से नि:स्पृह तथा ऐसे वाद-विवाद एवं विरोधाभास से पवित्र हों जो अन्वेषकों के नज़दीक कमज़ोरी का कारण हो।

द्वितीय- ठोस सबूत قَطْعِيُّ الثُّبُوْتِ ظَنِّيُّ الدَّلَالَتِ जैसे वे आयतें और हदीसें जिन का सही और वास्तविक होना तो निश्चित हो परन्तु उनकी तावील की जा सकती हो।

तृतीय- ظَنِّيُّ الثُّبُوْتِ قَطْعِيُّ الدَّلَالَتِ जैसे वे एक रावी वाली हदीसें जो हों तो स्पष्ट परन्तु अधिक सुदृढ़ न हों और उनमें कुछ दोष पाया जाता हो।

चतुर्थ - ظَنِّيُّ الثُّبُوْتِ وَالدَّلَالَةِ

ऐसी एक रावी वाली हदीसें जो कई अर्थों पर आधारित हों और संदिग्ध हों।

और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सबूतों में सबसे ठोस और सुदृढ़ सबूत प्रथम प्रकार के हैं तथा पूछने वाले को इसके बिना संतोष प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि सच की तुलना में कल्पना की कोई वास्तविकता नहीं और वह अटल विश्वास की ओर गुंजायश नहीं पाता। और मुझे हमेशा ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा ही रही जो इस मैदान में विश्वास का दावा करता। और प्रतीक्षक बना रहा कि शत्रुओं में से किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में मुझे सूचना मिल जाए किन्तु इस समय तक कोई भी मुकाबले पर नहीं आया, बल्कि वे कायरों की भांति मुझ से भाग निकले। अत: मैंने निराशा लोगों की तरह उन्हें अलविदा कह दिया और मैं बिल्कुल अकेला ही चल पड़ा यहां तक कि कुछ समय के बाद हे अदूरदर्शी और बीमार आंख वाले तेरी यह पुस्तक मुझे मिली और मैंने इस पर दृष्टि डाली और पल भर विचार किया तो मैंने जाना कि यह तो रद्दी माल है तथा अनिवार्य है कि इस पर पर्दा ही पड़ा रहे और इसे बतौर सामान प्रस्तुत न किया जाए और यदि तुझे इर्फान रूपी प्रकाश प्राप्त होता तथा तूने एक आँखों वाले व्यक्ति के समान विचार किया होता तो तू स्वयं अपने दोषों को छिपा लेता और अपने पड़ोसी को अपनी कमज़ोरी की ओर न बुलाता।... (शेष.....) पुस्तक: (इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 24-30)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

इस्लाम की सेवा की भावना जो हज़रत मसीह मौऊद के अंदर पाई जाती थी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत मौलाना अबदुल करीम साहब सियालकोटी रिवायत करते हैं कि एक मौक़ा पर आप ने फ़रमाया कि

''मेरा तो ख़्याल है कि शौचालय जाने पर भी मुझे अफ़सोस आता है कि इतना समय नष्ट हो जाता है। ये भी किसी दीनी काम में लग जाये... कोई काम जो दीनी कामों में रुकावट बन जाए और वक़्त का कोई हिस्सा ले, मुझे बहुत बुरा लगता है... जब कोई दीनी ज़रूरी काम आ पड़े तो मैं अपने ऊपर खाना पीना और सोना हराम कर लेता हूँ, जब तक कि वह काम न हो जाए... हम दीन के लिए हैं और दीन की ख़ातिर ज़िंदगी बसर करते हैं। बस दीन की राह में हमें कोई रोक न होनी चाहिए।' (सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अज़ मौलाना अबदुलकरीम साहब)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक और सहाबी हज़रत याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी बयान करते हैं-

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़ित्रत में तब्लीग़ इस्लाम का जोश इस क़दर था कि कभी-कभी मुझे डर होता है कि इस जोश को देख कर मेरा दिमाग़ फट जाये।" (हयात-ए-अहमद अज़ याक़ूब अली- 150)

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ने एक अवसर पर फ़रमाया-

"मेरे दिमाग़ में इस्लाम की हालत और ईसाइयों के हमलों को देख देखकर इस क़दर जोश उठता है कि कभी कभी मुझे ख़तरा होता है कि दिमाग़ फट ना जाये।" (अलहकम 7-14 फरवरी 1923 पृष्ठ 8)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक बहुत बड़ी दिली तमन्ना:

हुज़ूर अलैहिस्सलाम की एक बहुत बड़ी दिली तमन्ना यह थी कि सारी दुनिया में इस्लाम का बोल-बाला और ग़लबा हो। यह सोच और फ़िक्र आपको हमेशा लगी रहती। आपके इस बेताब जज़बे का अंदाज़ा एक दिलचस्प रिवायत से होता है जो हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब की बयान की हुई है। आप बयान करते कि:

"एक दफ़ा वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास कमरे में बैठे थे। हज़ूर एक किताब लिख रहे थे। दरवाज़े पर किसी ने ख़ूब ज़ोरदार दस्तक दी। आपने मुझे फ़रमाया कि जाकर देखूँ कि कौन है और किस लिए आया है? मैंने दरवाज़ा खोला तो दस्तक देने वाले ने बताया कि मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही ने भिजवाया है कि हज़ूर की ख़िदमत में ये ख़ुशख़बरी पेश की जाये कि आज अमुक शहर में उनका एक ग़ैर अहमदी मौलवी से मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) हुआ और उन्होंने उसको परास्त कर दिया। हज़रत मुफ़्ती साहब बयान करते हैं कि जब मैंने यह सारा पैग़ाम हज़ूर को सुनाया तो हुज़ूर सुन कर मुस्कुराए और फ़रमाया कि उनके इस तरह ज़ोरदार दरवाज़ा खटखटाने और फ़तह का ऐलान करने से मैं यह समझा था कि शायद वह यह ख़बर लाए हैं कि यूरोप मुसलमान हो गया!'

(सीरततुल महदी जिल्द 1 पृष्ठ 289-290)

एक जगह फरमाया: "हमारे बस में हो तो हम फ़क़ीरों की तरह घर-घर फिर कर ख़ुदा तआला के सच्चे दीन का प्रचार प्रसार करें और इस हलाक करने वाले शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और कुफ्र से जो दुनिया में फैला हुआ है,लोगों को बचा लें... और इसी तब्लीग़ में अपनी ज़िंदगी ख़त्म कर दें चाहे मारे ही जाएं। (मलफ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 292)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

फ़ज़ाइले[4] क़ुर्आन मजीद

जमालो[5] हुस्ने कुरआँ नूर-ए-जाने हर मुसलमां है
क़मर[6] है चांद औरों का हमारा चांद क़ुरआँ है
नज़ीर7 उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता[8] कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ[9] पैदा है उसकी हर इबारत[10] में
न वो ख़ूबी चमन[11] में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
कलामे[12]-पाके-यज़दाँ का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए[13] अम्मा है वगर लअले बदख़्शाँ है
ख़ुदा के कौल[14] से कौले बशर[15] क्योंकर बराबर हो
वहाँ क़ुदरत यहाँ दरमान्दगी[16] फ़र्क़े नुमायाँ है
मलायक[17] जिसकी हज़रत में करें इक़रारे-ला-इल्मी[18]
सुख्न[19] में उसके हमताई[20], कहाँ मक्दूरे इन्साँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर[21] हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूहे हक़ का उस पे आसाँ है
अरे लोगो ! करो कुछ पास शाने किब्रियाई का
ज़ुबाँ[22] को थाम लो अब भी अगर कुछ बूए[23] ईमाँ है
ख़ुदा से ग़ैर को हम्ता[24] बनाना सख़्त कुफ़्राँ है
ख़ुदा से कुछ डरो यारो, ये कैसा किज़बो[25] बुहताँ है
अगर इकरार है तुम को ख़ुदा की ज़ाते वाहिद का
तो फिर क्यों इस क़दर दिल में तुम्हारे शिर्क पिन्हाँ[26] है
ये कैसे पड़ गए दिल पर तुम्हारे जहल[27] के पर्दे
ख़ता करते हो बाज़ आओ अगर कुछ ख़ौफ़े यज़दाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाइयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे क़ुरबाँ है
(बराहीन अहमदिया, भाग 3, पृ. 183, प्रकाशन 1882 ई. रूहानी ख़ज़ायन भाग 1, पृ. 198)

---

4. क़ुर्आन मजीद की ख़ूबियाँ। 5. ख़ूबसूरती। 6. चन्द्रमा। 7. उपमा। 8. अकेला। 9.चिरकाल की बसन्द। 10. पंक्ति। 11. बाग़। 12. ख़ुदा। 13. मरकन मणि। 14. कथन। 15. मानव। 16. कमज़ोरी। 17. फ़रिश्ते । 18. अज्ञानता। 19. कथन। 20. बराबरी। 21.मानव। 22.जीभ। 23. ईमान की ख़ुश्बू। 24. बराबरी। 25. झूठ। 26. छुपा हुआ। 27.अज्ञानता।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 3.5.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

हमरुल असद एंव ओहद नामक युद्ध के हवाले से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय का वर्णन तथा दुनिया के हालात और हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वास्थ्य के लिए दुआ की तहरीक।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हमरुल असद नामक युद्ध का वर्णन हो रहा था इसके अंतर्गत हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने ओहद की लड़ाई से मदीना वापसी तथा हमरुल असद की लड़ाई का जो वर्णन किया है, वह बयान करता हूँ। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि ओहद के युद्ध से वापस लौटने वाली रात एक अति भयावह रात थी। क्यूँकि बावजूद इसके कि क़ुरैश की सेना ने प्रत्यक्षत: मक्का की राह ली थी किन्तु आशंका थी कि उनकी यह योजना मुसलमानों को निश्चिंत करने के उद्देश्य से न हो। अतएव उस रात मदीने में पहरा देने का प्रबन्ध किया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मकान का भी सहाबियों रज़ी. ने विशेष रूप से पहरा दिया। सवेरा हुआ तो पता चला कि यह आशंका केवल एक भ्रम नहीं थी क्यूँकि फ़ज्र से पहले आप स. को यह सूचना मिली कि क़ुरैश की सेना मदीने से कुछ मील दूर जाकर ठहर गई है तथा क़ुरैश के सरदारों में वाद विवाद जारी है कि न तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हत्या की, न मुसलमान महिलाओं को सेविकाएँ बनाया, न उनकी सम्पत्ति पर क़बज़ा किया, बल्कि जब तुम उन पर ग़ालिब आए तो तुम उनको ऐसे ही छोड़ कर चले आए ताकि वे दोबारा शक्ति पकड़ लें। अत: अब भी अवसर है कि वापस चलो तथा मदीने पर हमला करके मुसलमानों की जड़ काट दो। इसके विपरीत दूसरे कहते थे कि तुम्हें एक विजय मिल गई है उसे पर्याप्त मानो तथा वापस चलो, ऐसा न हो कि यह विजय भी पराज्य में बदल जाए। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह सूचना मिली तो तुरन्त रवानगी की घोषण करवाई तथा साथ ही यह निर्देश दिया कि ओहद

पर जाने वालों के अतिरिक्त कोई अन्य हमारे साथ न निकले। ओहद के मुजाहिद अपने घावों को बाँध कर अपने आक़ा के साथ चल पड़े। आठ मील की दूरी पार करके आप स. हमरुल असद पहुंचे, यहाँ आपने आग जलाने का आदेश दिया। अतएव पाँच सौ आगें तुरन्त रौशन हो गईं। यहीं मअबद नामक मुशरिक सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिला तथा आगे जाकर उसने अपनी बातों से अबू सुफ़यान तथा क़ुरैश के अन्य सरदारों के साहस दुर्बल किए। मअबद की बातों का ऐसा रौब पड़ा कि उन्होंने मदीने की ओर चढ़ाई का निश्चय छोड़ दिया तथा मक्का की ओर लौट गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमरुल असद में दो तीन दिन विश्राम किया तथा पाँच दिन की अनुपस्थिति के बाद मदीने वापस तशरीफ़ ले आए। ओहद की लड़ाई के परिणाम के विषय पर बड़ी लम्बी आलोचनाएँ की गई हैं। कुछ सीरत के लेखक इसे पराज्य बताते हैं, कुछ इसे पराज्य कहने से बचते हैं तथा अपना मत समानान्तर रखना चाहते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो इसे पराज्य के बाद विजय बतलाते हैं। वास्तविकता यह है कि उस समय के युद्धों की प्रथा एवं नियमों के अनुसार इसे पराज्य नहीं कहा जा सकता, क्यूँकि मुसलमान तो उस समय भी मैदान में मौजूद थे जब अबू सुफ़यान केवल नारे लगाता हुआ मैदान से रवाना हो गया था। अबू सुफ़यान ने यह खोखला नारा भी लगाया था कि आज का दिन बदर के बदले का दिन है, जबकि यह बदर का बदला कैसे हो गया? बदर में तो मुसलमानों ने काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार मार गिराए थे, उन्हें माले ग़नीमत मिला था, काफ़िरों के सत्तर लोग बन्दी बनाए गए थे। इसी तरह बदर में मुसलमान विजयी होकर, रिवायतों के अनुसार तीन दिन तक ठहरे रहे थे। जबकि ओहद के दिन काफ़िरों को इनमें से कोई एक बात भी प्राप्त न हो सकी तो भला यह बदर का बदला कैसे हुआ। हाँ, ओहद में पहले चरण में विजय के बाद दूसरे चरण में मुसलमानों को बहुत से जानी नुकसान का सामना करना पड़ा।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब रज़ी. बयान करते हैं कि निरन्तर परिणामों की दृष्टि से तो ओहद की लड़ाई बदर के युद्ध की तुलना में कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती परन्तु उस समय की स्थिति के अनुसार इस युद्ध ने मुसलमानों को अवश्य हानि पहुंचाई। पहली बात यह है कि मुसलमानों के सत्तर आदमी शहीद हुए जिनमें कुछ प्रतिष्ठित सहाबा रज़ी. भी शामिल हैं तथा ज़खमियों की संख्या तो अत्यधिक थी। दूसरी बात यह है कि मदीने के यहूदी तथा मुनाफ़िक़ जो बदर के युद्ध के परिणाम स्वरूप रौब में आ गए थे, अब कुछ दलेर हो गए। तीसरा यह कि मक्का के काफ़िरों का साहस बढ़ गया तथा उन्होंने अपने दिल में यह समझ लिया कि हमने न केवल बदर का बदला उतार लिया है बल्कि आगे भी जब कभी जत्था बना कर हमला करेंगे तो मुसलमानों को अपने आधीन कर सकेंगे। चौथी बात यह हुई कि साधारण क़बीलों ने भी ओहद के बाद अधिक साहस के साथ सिर उठाना शुरु कर दिया। परन्तु इन बातों के बावजूद यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि जो हानि क़ुरैश को बदर के युद्ध ने पहुंचाई थी, ओहद की विजय उसका बदला पूरा नहीं कर सकती।

ओदह के युद्ध की हानि एक दृष्टि से मुसलमानों के लिए लाभदायक साबित हुई क्यूँकि उन

पर यह बात उज्जवल दिन की भांति प्रकट हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा एवं हिदायत के विरुद्ध एक पग भी आगे बढऩा कभी भी लाभदायक एवं कल्याणकारी नहीं हो सकता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने में ठहरने के पक्ष में अपना मत दिया तथा इस संदर्भ में अपना एक सपना भी सुनाया परन्तु लोग बाहर निकल कर लडऩे के लिए आतुर थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ओहद के एक संकीर्ण रास्ते पर नियुक्त फ़रमाया तथा अत्यधिक सावधानी रखने का निर्देश दिया कि इस स्थान को न छोडऩा, किन्तु उन्होंने माले गनीमत के विचार से इस स्थान को खाली छोड़ दिया। अत: ओहद में हारना यदि एक दृष्टि से कष्ट का कारण थी तो दूसरे आयाम से वह मुसलमानों के लिए एक लाभप्रद पाठ बन गई।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रह. ने एक सम्बोधन में ओहद की लड़ाई के बाद की घटनाओं का जो विश्लेषण किया है, उसके कुछ बिन्दु हैं- १- मुसलमानों में से पराजित होने की भावना को पूर्णत: मिटाने के लिए इससे अच्छी योजना सम्भव न थी। २- नव उत्साहित युवाओं तथा नए मुजाहिदों को साथ न चलने की अनुमति न देकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूर्ण रूप से यह साबित कर दिया कि आप स. का वास्तविक भरोसा अपने रब पर ही है। ३- आप स. ने अपने उन सहाबियों की दिलदारी फ़रमाई जिनके पाँव ओहद के मैदान में उखड़ गए थे तथा उन पर सम्पूर्ण भरोसा करने की अभिव्यक्ति फ़रमाई। ४- आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह शतप्रतिशत भरोसा करना कोई भावनात्मक निर्णय नहीं था बल्कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ओहद के अगले दिन ही शत्रु का पीछा करने का निर्णय अपने साथियों पर ऐसा महामान्य उपकार है कि कभी किसी सेनापति ने अपनी सेना पर नहीं किया कि उनकी ज़खमी भूमिका को एक पल में ऐसा सम्पूर्ण उपचार प्रदान किया हो।

५- बाद की घटनाओं से साबित है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह क़दम केवल मानसिक उपचार तथा नैतिक नहीं था बल्कि सैन्य कुशलता की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्व पूर्ण साबित हुआ। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने केवल अपने विवेक एंव युक्ति के माध्यम से अनेक महामान्य लाभ प्राप्त किए। आप रह. फ़रमाते हैं कि नि:सन्देह नबवी युद्धों पर दृष्टि डालने से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्दर, अद्वित्तीय प्रतिभाओं पर भी अदभुत रोशनी पड़ती है परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अव्व्ल व आखिर पात्रता एक कुशल यौद्धा की नहीं बल्कि एक नैतिक एवं आध्यात्मिक सरदार की थी जिसके हाथ में नैतिक कर्मों का झंडा थमाया गया था। उच्चतम नैतिक आचरण का झंडा बुलन्द रखने वाले तथा और अधिक ऊँचा करते चले जाने के जिस महान संघर्ष में आप स. व्यस्त थे, वह कभी न समाप्त होने वाला ऐसा संघर्ष था जो शांति की अवस्था में उसी तरह जारी रहा जैसे युद्ध की अवस्था में।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि ओहद का युद्ध मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक महान निशान था। इस युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार पहले मुसलमानों को सफलता मिली, फिर आप स. के प्रिय चाचा लड़ाई में मारे गए। फिर हमले के आरम्भ में काफ़िरों का झंडा वाहक मारा गया, फिर आप स. की पेशगोई ही के अनुसार आप स. स्वयं भी ज़खमी हुए तथा अनेक सहाबी शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसे शिष्टाचार एवं ईमान को प्रकट करने का अवसर मिला जिसका उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ओहद के युद्ध के तुरन्त बाद होने वाले हमरुल असद नामक युद्ध का बयान यहाँ समाप्त होता है।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि दुनिया के हालात, मुसलमानों की हालत तथा फ़लिस्तीन के बारे में दुआओं की ओर मैं ध्यान दिलाता रहता हूँ। यद्यपि प्रत्यक्षत: कुछ वर्गों की ओर से यह व्यक्त किया जा रहा है कि युद्ध विराम कुछ अवधि के लिए हो जाए परन्तु जो स्थिति दिखाई दे रही है उससे लगता है कि यदि हो भी जाए तो तब भी अल्लाह फ़लिस्तीन को भी सामथ्र्य दे और वे भी अल्लाह तआला की ओर झुकें। अतएव अब लग रहा है कि इन परिस्थितियों में अल्लाह तआला ने इन अहंकारियों के अहंकार को तोडऩे की भी व्यवस्था कर दी है। यह काम कब सम्पूर्ण रूप में होता है, यह अल्लाह बेहतर जानता है परन्तु यह घमंड जो है वह इनका अब टूटना शुरु हो गया है। इनके अन्दर से ही इनके विरोधी पैदा होना शुरु हो गए हैं। अमरीका में भी आन्दोलन हो रहे हैं। अब शक्ति को उपयोग में ला रहे हैं कि आन्दोलन बन्द करें परन्तु फिर भी ये चिंगारियाँ भड़केंगी, अस्थाई रूप में रुकेंगी भी, तो फिर भड़क जाएँगी। अल्लाह तआला दुनिया की बड़ी शक्तियों को बुद्धि प्रदान करे कि वे न्याय से काम लें। अपने लिए और नियम हैं इनके, तथा दूसरों के लिए और। यही चीज़ जो है फिर एक समय पर आकर यू.एन. के टूटने का भी कारण बन जाएगी।

ख़ुत्बः के अन्त में सय्यदना अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने स्वास्थय के विषय में जमाअत के दोस्तों को स्नेह पूर्ण अवगत करते हुए फ़रमाया कि दूसरी दुआ जिसके लिए मैं आज कहना चाहता हूँ, वह अपने लिए है। एक लम्बे समय से मुझे दिल के वाल्व की कठिनाई थी, डाक्टजऱ् प्रोसीजर कहा करते थे परन्तु मैं टालता रहा था। अब डाक्टरों ने कहा कि ऐसी स्टेज आ गई है कि और अधिक प्रतीक्षा उचित नहीं। अतएव उनके कहने पर पिछले दिनों वाल्व को बदलने का प्रोसीजर हुआ है। अलहम्दुलिल्लाह ठीक हो गया और इस लिए मैं कुछ दिन डाक्टरों की हिदायत के अनुसार मस्जिद भी नहीं आ सका। डाक्टर कहते हैं कि मेडिकली अब जो प्रोसीजर होना था, वह अल्लाह की फ़ज़्ल से सफल हुआ है, दुआ करें कि अल्लाह तआला ने जितना भी जीवन देना है, सक्रि य जीवन प्रदान करे, आमीन।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
(लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

अत: स्पष्ट है कि पत्थर की मूर्तियों को तो जीवित करके नहीं उठाया जाता बल्कि मृत्योपरान्त मनुष्य को ही उठाया जाएगा।

इसके अतिरिक्त आयत में اَلَّذِین का शब्द प्रयोग किया गया है जो अरबी भाषा के नियमानुसार स्थूल पदार्थों के लिए प्रयोग नहीं होता बल्कि प्राणियों तथा मनुष्यों के लिए प्रयोग होता है। इसलिए भी यहां पत्थर इत्यादि अभिप्राय नहीं हो सकते। अत: जब कि यह सिद्ध हो गया कि यह आयत उन मनुष्यों के बारे में ही है जो बतौर उपास्य नबी करीम (स.अ.व.) के युग में पूजे जाते थे तो निश्चित तौर पर हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का भी इस सूची में सम्मिलित होना स्वीकार करना पड़ेगा, बल्कि क्या इस दृष्टिकोण से कि वह युग के अनुसार नबी करीम (स.अ.व.) के सर्वाधिक निकट थे तथा क्या इस दृष्टिकोण से कि मानव ख़ुदाओं में सर्वाधिक उपासना मसीह की की जाती है। सब से पहला व्यक्ति जो इस सूची के अन्तर्गत आता है वह मसीह ही है। अत: सिद्ध हुआ कि मसीह उन लोगों में विशेष तौर पर सम्मिलित हैं, जिन के बारे में ख़ुदा फ़रमाता है कि :-

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ

अर्थात् "वे मुर्दा हैं न कि जीवित और वे नहीं जानते कि उन का जीवित होकर उठना कब होगा।"

आयत وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ व इम्मिन अहलिल **किताबे की सही व्याख्या**

उपरोक्त क़ुर्आनी आयत से भली भांति स्पष्ट हो चुका होगा कि हज़रत मसीह आकाश पर नहीं गए बल्कि सामान्य लोगों की भांति अपना जीवत व्यतीत करके पृथ्वी पर ही मृत्यु को प्राप्त हो गए, परन्तु यहां आवश्यक मालूम होता है कि हमारे विरोधी जिस आयत से मसीह का जीवित रहना सिद्ध करते हैं उसकी संक्षिप्त व्याख्या कर दी जाए ताकि यह बात हर तरह से स्पष्ट हो जाए। क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ (सूरह अन्निसा, रुकू-22)

इस आयत के अर्थ ग़ैर अहमदी उलमा सामान्य तौर पर इस प्रकार करते हैं कि-

"कोई अहले किताब में से नहीं परन्तु मसीह की मृत्यु से पूर्व मसीह पर ईमान लाएगा।"

जिस से वे यह परिणाम निकालते हैं कि मसीह अब तक जीवित है और अन्तिम युग में आकाश से उतरेगा और उस समय सब के सब अहले किताब उस पर ईमान लाने पर विवश किए जाएंगे[1] ✲ परन्तु

✲ हमारे विरोधी ये अर्थ करते हुए इतना विचार नहीं करते कि इन्ही यहूद के बारे में उपरोक्त आयत से कुछ आयतें पहले अल्लाह तआला फ़रमाता है अर्थात् "उन में से बहुत थोड़े लोग ईमान लाएंगे" अत: इस ठोस आयत के होते हुए बहस के अन्तर्गत आयत के अन्य अर्थ किस प्रकार किए जा सकते हैं?

यदि हम तनिक विचार से काम लें तो इस सबूत का समस्त रहस्य प्रकट हो जाता है। क़ुर्आन करीम के शब्द हैं وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ जिस के अर्थ हैं "समस्त अहले किताब बिना अपवाद के"। अत: यदि यह मान भी लिया जाए कि जिस समय मसीह उतरेंगे उस समय जितने यहूदी होंगे सब के सब मसीह पर ईमान ले आएंगे तब भी وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ का अर्थ पूरा नहीं होता, क्योंकि वे लाखों, करोड़ों यहूदी जो इस आयत के उतरने और मसीह के आगमन के मध्य मृत्यु पा गए होंगे वे किस प्रकार ईमान लाएंगे? वे तो बहरहाल अपवाद ही रहेंगे, परन्तु आयत के शब्द किसी अपवाद को स्वीकार नहीं करते। अत: ज्ञात हुआ कि इस आयत के जो अर्थ किए जाते हैं वे ग़लत हैं। इसके अतिरिक्त हम क़ुर्आन करीम में पढ़ते हैं कि:-

فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (सूरह माइदह रुकू-3)

अर्थात् "हम ने यहूदियों और ईसाइयों में शत्रुता और बैर डाल दिया है जो प्रलय के दिन तक स्थापित रहेगा।"

इस से सिद्ध हुआ कि ऐसा कोई समय नहीं आएगा कि जब यहूदी और ईसाई बिल्कुल समाप्त हो जाएंगे बल्कि वे प्रलय तक रहेंगे। इस आयत के अतिरिक्त और भी बहुत सी क़ुर्आन की आयतें है जो हमें स्पष्ट तौर पर बताती हैं कि यहूदी प्रलय तक रहेंगे और बिल्कुल समाप्त कभी नहीं होंगे। अत: उपरोक्त विवादित आयत के ये अर्थ करना कि कोई ऐसा समय आएगा कि जब समस्त यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आएंगे क़ुर्आनी शिक्षा के सरासर विरुद्ध है।

फिर आयत के उचित अर्थ क्या हुए? इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व मैं यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि जो अर्थ हमारे विरोधी करते हैं उन पर पूर्वकालीन बुज़ुर्ग कदापि एकमत नहीं हैं बल्कि इस आयत की व्याख्या में पूर्वकालीन धर्माचार्यों में भी अत्यधिक मतभेद हुआ है। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ प्रकट करता है। स्पष्ट है कि इस आयत के सही अर्थ वही होंगे जो क़ुर्आन करीम की नितान्त स्पष्ट और ठोस आयतों के विपरीत न हों तथा आयत का अगला-पिछला प्रसंग भी उनका सत्यापन करता हो। अत: सर्वप्रथम हम आयत के परिदृश्य पर दृष्टि डालते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इस आयत से पूर्व यहूद के इस दावे का वर्णन है कि उन्होंने मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर मार दिया जिसके खंडन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वास्तव में मसीह सलीब पर नहीं मरा बल्कि यहूदियों को भ्रम हुआ है। हां मसीह घावों की पीड़ा के कारण ऐसी मूर्छावस्था में अवश्य हो गया था कि जिस से वह सलीब पर मर जाने वाले के समान हो गया। इसलिए यहूदियों को यह धोखा लगा कि मसीह वास्तव में सलीब पर मर गया है, परन्तु यहूदियों ने इस बारे में पूर्ण छान-बीन से काम नहीं लिया बल्कि एक भ्रम का अनुसरण करते रहे। तत्पश्चात् ख़ुदा फ़रमाता है कि

اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

अर्थात् "समस्त अहले किताब अपनी मृत्यु से पूर्व इसी बात पर ईमान रखेंगे (कि मसीह निश्चित ही सलीब पर मर गया)

परन्तु उन का यह ईमान केवल उनकी मृत्यु तक रहेगा और मृत्योपरांत उन पर मूल वास्तविकता

प्रकट हो जाएगी क्योंकि मृत्यु के पश्चात् वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है तथा मनुष्य को अपनी भूलों का ज्ञान हो जाता है।

देखिए! ये अर्थ कितने स्पष्ट हैं तथा अगले-पिछले प्रसंग के बिल्कुल अनुकूल हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस सांसारिक जीवन में तो नि:सन्देह समस्त अहले-किताब की यही धारणा रहेगी कि मसीह सलीब पर मर गया था, परन्तु यह ईमान केवल उनकी मृत्यु तक है, मृत्योपरान्त उन्हें ज्ञात हो जाएगा कि उनका विचार ग़लत था तथा मसीह की मृत्यु वास्तव में सलीब पर नहीं हुई थी। इसके अतिरिक्त इस आयत के जो अर्थ हमारे विरोधी करते हैं उसके अन्तर्गत यह आयत यहूदियों के लिए एक बड़ी बरकत का कारण बनती है कि मानो वे सब के सब एक दिन मोमिन बन जाएंगे। हालांकि इस आयत से पहली और पिछली आयतें यहूदियों के उपद्रवों और दुर्भाग्यों पर आधारित हैं। अत: इस मध्य की आयत को शुभ संदेश देने वाली आयत कैसे समझा जा सकता है। हमारे अर्थों का अतिरिक्त समर्थन इस प्रकार भी होता है कि आयत में जो शब्द **مَوْتِه** आया है उसको पढने का दूसरा ढंग **مَوْتِهِمْ** आया है जैसा कि 'तफ़्सीर बैज़ावी' और 'कश्शाफ़' इत्यादि में उल्लेख है। इस से स्पष्ट है कि **مَوْتِه** का सर्वनाम (ज़मीर) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर कदापि नहीं जाता बल्कि अहले-किताब की ओर जाता है और **بِهٖ** (बिही) के शब्द में जो सर्वनाम है वह अहले किताब के उस कथन की ओर जाता है कि मसीह की मृत्यु सलीब पर हो गई क्योंकि इस आयत से पूर्व क़ुर्आन करीम में इस बात की चर्र्चा की गई है। इस आयत के जो अर्थ यहां हमने किए हैं बहस के अन्तर्गत आयत का अन्तिम भाग भी उन अर्थों का बड़े ठोस रूप में समर्थन कर रहा है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है।[2]* ..... अर्थात् "अहले किताब इसी धारणा पर जमे रहेंगे कि मसीह अलैहिस्सलाम की वास्तव में सलीब पर मृत्यु हो गई थी। परन्तु प्रलय के दिन जब समस्त मुर्दे उठाए जाएंगे तो मसीह उनके विरुद्ध एक साक्षी के तौर पर खड़ा होगा और उन्हें बता देगा कि उसकी सलीबी मृत्यु के बारे में उनकी धारणा ग़लत थी। अत: बहस के अन्तर्गत आयत के अगले-पिछले प्रसंग और **مَوْتِه** (मौतिही) के स्थान पर **مَوْتِهِمْ** (मौतिहिम) को दूसरे ढंग से पढना और फिर क़ुर्आन करीम की स्पष्ट आयतें हमें विवश करती हैं कि हम ग़ैर अहमदी मौलवियों के अर्थों को ग़लत ठहरा दें।

क़ुर्आन करीम की व्याख्या का गुर

क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

هُوَالَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ. فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ فَاَغْرَیْنَا بَیْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ (आले इमरान रुकू-1)

---

*यह आयत स्वयं मसीह की मृत्यु का प्रमाण है क्योंकि अल्लाह तआला मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाता है कि वह अहले किताब पर प्रलय के ही दिन बतौर गवाह के होगा। यदि मसीह ने प्रलय से पूर्व भी उतरना था तो यह अर्थ ग़लत ठहरता है।

मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी इस आयत के अर्थ इस प्रकार करते हैं:-

"हे पैग़म्बर! वही पवित्र हस्ती है जिसने तुम पर यह किताब उतारी जिसमें कुछ आयतें पूरी तरह स्पष्ट हैं कि वही मूल सिद्धांत हैं और कुछ दूसरी मिलती जुलती (अर्थात बहु-अर्थी) हैं कि उनके अर्थों में कई पहलू निकल सकते हैं। अत: जिन लोगों के हृदयों में टेढ़ापन है वे तो क़ुर्आन की इन्हीं अस्पष्ट आयतों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि फ़साद पैदा करें।"

विचार करो कि अल्लाह तआला ने हमें क़ुर्आनी आयतों की व्याख्या करने का कैसा उपाय बताया है जिस से सारे विवाद का समूल अन्त हो जाता है। फ़रमाता है कि कुछ आयतें ऐसी हैं कि जिनके अर्थों के कई पहलू निकल सकते हैं। उदाहरणतया यही कि कोई सर्वनाम (ज़मीर) वर्णन किया गया हो जिसके लिए सम्भव है कि वह एक वस्तु की ओर फ़िरता हो और सम्भव है कि दूसरी वस्तु की ओर फिरता हो अथवा अन्य किसी प्रकार की समानता घटित हो जाए तो ऐसी अवस्था में ख़ुदा तआला हमारा मार्ग दर्शन करता है कि ऐसी आयतों के वही अर्थ करें कि जो क़ुर्आन करीम की पूरी तरह स्पष्ट आयतों के विपरीत न हों। अब देखो कि यह आयत कैसी स्पष्ट और निश्चित तौर पर सिद्ध कर रही है कि :-

فَاَغۡرَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَالۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

अर्थात् "यहूदियों और ईसाइयों में प्रलय तक शत्रुता रहेगी।"

अब न्याय का स्थान है कि हम विवादित आयत का यह अनुवाद किस प्रकार स्वीकार कर लें कि कोई ऐसा समय आने वाला है कि समस्त यहूदी मसीह अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आएंगे तथा वे और ईसाई एक हो जाएंगे।

कुछ विद्वान इस आयत के बारे में कहा करते हैं कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाह अन्हो ने भी इसके वही अर्थ किए हैं जो आजकल के मौलवी करते हैं। इसके उत्तर में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब फ़रमाते हैं:-

" **مَوۡتِه** (मौतिही) का सर्वनाम अहले किताब हैं न कि हज़रत ईसा। इसी कारण इस आयत की दूसरी उच्चारण शैली में **مَوۡتِهِمۡ** (मौतिहिम) है। यदि हज़रत ईसा की ओर यह सर्वनाम जाता तो दूसरे उच्चारण में मौतिहिम क्यों आता? देखो 'तफ़्सीर सनाई' कि उसमें बड़े ज़ोर से हमारे इस बयान का सत्यापन मौजूद है और उसमें यह भी उल्लेख है कि अबूहुरैरा रज़ि. के निकट यही अर्थ हैं, परन्तु तफ़्सीर का लेखक लिखता है कि अबूहुरैरा रज़ि. क़ुर्आन के बोध में कुशल और दक्ष नहीं तथा उसके हदीस के बोध पर हदीस के विद्वानों को आपत्ति है। अबू हुरैरा रज़ि. में नक़ल करने का तत्व था तथा वह हदीस के बोध और समझ से बहुत ही कम भाग रखता था और मैं कहता हूँ कि यदि अबू हुरैरा रज़ि. ने ऐसे अर्थ किए हैं तो यह उसकी ग़लती है जैसा कि कई अन्य स्थानों में हदीस के विद्वानों ने सिद्ध किया है कि जो बातें हदीस के बोध के बारे में हैं अबू हुरैरा रज़ि. उनके समझने में प्राय: ठोकर खाता है तथा ग़लती करता है। यह बात सर्वमान्य है कि एक सहाबी की राय शरई प्रमाण नहीं हो

सकती, शरई प्रमाण केवल सहाबा रज़ि. की सर्वसम्मति है। अत: हम वर्णन कर चुके हैं कि इस बात पर सहाबा रज़ि. की सर्वसम्मति हो चुकी है कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और स्मरण रखना चाहिए कि जब कि आयत **قَبْلَ مَوْتِهٖ** की दूसरी उच्चारण शैली **قَبْلَ مَوْتِهِمْ** क़बला मौतिहिम मौजूद है जो हदीस के विद्वानों के नियमानुसार सही हदीस का आदेश रखता है अर्थात् ऐसी हदीस जो आंहज़रत (स.अ.व.) से सिद्ध है तो इस अवस्था में केवल अबू हुरैरा रज़ि. का अपना कथन खंडन करने योग्य है, क्योंकि वह आंहज़रत (स.अ.व.) के कथन की तुलना में तुच्छ और व्यर्थ है तथा उस पर आग्रह कुफ़्र तक पहुँचा सकता है, फिर इसी पर बस नही बल्कि अबूहुरैरा रज़ि. के कथन से क़ुर्आन करीम का असत्य होना अनिवार्य होता है, क्योंकि क़ुर्आन करीम तो स्थान-स्थान पर फ़रमाता है कि यहूदी और ईसाई प्रलय तक रहेंगे, उनका समूल विनाश नहीं होगा तथा अबूहुरैरा रज़ि. कहता है कि यहूद का पूर्णतया अन्त हो जाएगा और यह बात क़ुर्आन करीम के बिल्कुल विपरीत है। जो व्यक्ति क़ुर्आन करीम पर ईमान लाता है उसे चाहिए कि अबू हुरैरा रज़ि. के कथन को एक रद्दी वस्तु की भांति फेंक दे।"

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया, भाग पंचम, पृष्ठ 234, 235)

अत: यह निश्चित बात है कि विवादित आयत में **مَوْتِهٖ** (मौतिही) का सर्वनाम अहले किताब हैं न कि ईसा अलैहिस्सलाम। जब यह सिद्ध हो गया कि **مَوْتِهٖ** का सर्वनाम ईसा नहीं होता तो चाहे कल्पना के तौर पर 'बिही' का सर्वनाम ईसा को ही मान लिया जाए और आयत के कोई से भी अर्थ कर लिए जाएं तो भी इस आयत से यह कदापि सिद्ध नहीं हो सकता कि मसीह जीवित है और यही अभीष्ट था। आश्चर्य है कि हमारे विरोधी जिन आयतों को मुतशाबिहात (*मिलती जुलती)* आयतों में मानते हैं तथा पूर्वकालीन भाष्यकारों ने भी उनके अर्थों में परस्पर बड़ा मतभेद किया है, उन पर ऐसे नितान्त आवश्यक मामलों की नींव रखी जाती है तथा नितान्त स्पष्ट आदेशों को ध्यानयोग्य नहीं समझा जाता है, परन्तु ज्ञात रहे कि यह किन लोगों का कार्य है। सुनिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ

(सूरह आले इमरान)

अर्थात् "जिन लोगों के हृदय में टेढ़ापन है वे ही मुतशाबिहात (*मिलती जुलती)* आयतों के पीछे लगते हैं।"

परन्तु आपने देखा कि हमने ख़ुदा तआला की कृपा से उसकी अस्पष्टता को भी ऐसा दूर कर दिया है कि अब यह आयत भी पूरी तरह स्पष्ट आयतों में दिखाई देती है, जिसके नेत्र हों देखे। (... शेष)

☆ ☆ ☆

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

जमात अहमदिया की बैअत करने वालों के लिए निर्देश
(नौमुबाइयीन के लिए)

(भाषण: हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो,

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

2 मई (1921 ई) मग़रिब की नमाज़ के बाद एक सज्जन, जूनागढ़ (गुजरात काठियावाड़) से हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह द्वितीय की सेवा में बैअत करने के लिए प्रस्तुत हुए। चूँकि उनको दारुलअमान (क़ादियान) आए हुए दो-तीन दिन ही हुए थे और एक ऐसे क्षेत्र से आए थे जहाँ जमाअत के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाले बहुत कम लोग हैं। इसलिए हुज़ूर ने बैअत लेने से पूर्व उन्हें सम्बोधित करके एक भाषण दिया जो निम्नलिखित है। दोस्त इससे जहाँ स्वयं लाभ उठाएं वहाँ ग़ैर अहमदियों में भी इसका प्रसार करें ताकि उन्हें मालूम हो कि जमाअत अहमदिया में किस प्रकार और किन लोगों को सम्मिलित किया जाता है।

हुज़ूर ने फ़रमाया :-

बैअत का मामला चूँकि एक महत्वपूर्ण मामला है इसलिए इससे पहले कि आप बैअत करें मैं कुछ बातें आप को सुनाना चाहता हूँ।

समझबूझ कर बैअत न करने का नुकसान

यदि आप इस समय पूरी छान-बीन करके सिलसला में शामिल नहीं हुए और अच्छी तरह समझ कर बैअत नहीं की तो संभव है जब आप मुखालिफों (विरोधियों) की बातें सुनें तो अपने बचन पर स्थापित न रह सकें और इसका परिणाम यह होगा कि आपके दिल पर एक ज़ंग लग जाएगा। क्योंकि यदि मान लिया जाए कि यह सिलसिला (जमाअत) झूठा है तो इसलिए कि आपने जल्दबाज़ी से काम लिया और पूरी छान-बीन किए बिना इसको अपना लिया। और यदि सच्चा है तो इसलिए कि सच्चे रास्ते को छोड़ कर भटक गए और सच्चाई से दूर हो गए।

अहमदियत में दाख़िल (सम्मिलित) करने का उद्देश्य

हमारा यह तरीक़ा नहीं कि लोगों को ऐसे ही सिलसिले में शामिल कर लें बल्कि हमारा उद्देश्य लोगों में तक़्वा (संयम) और शुद्धता पैदा करना और उन्हें बुराइयों और अश्लीलता से बचाकर इस्लाम पर क़ायम करना है। **इसलिए हम हर एक को यही कहते हैं कि वह पहले छान-बीन करे और अच्छी तरह समझ ले फिर अहमदियत को स्वीकार करे। इसमें जल्दबाज़ी न करे क्योंकि यदि वह जल्दबाज़ी से स्वीकार कर लेता है और फिर ठोकर खा कर सिलसिला से अलग होता है, तो एक ऐसा आदमी हमारे हाथ से जाता रहा जिसके आने की पहले तो आशा की जा सकती थी लेकिन अब उसका आना यदि नामुमकिन नहीं तो पहले की तुलना में बहुत अधिक मुश्किल अवश्य हो गया। इसका उदाहरण ऐसा है कि वृक्ष पर जब कच्चा फल लगा हो तो आशा की जा सकती है कि पकेगा और पक कर हाथ में आएगा किन्तु यदि कच्चे को ही तोड़ लिया जाए तो फिर वह नहीं पक सकेगा।**

सारी दुनिया हमारे लिए बाग़ है

चूँकि हम सारी दुनिया को समझते हैं कि हमारे लिए बाग़ है इसलिए हम नहीं चाहते कि कोई फल कच्चा तोड़ें। हम चोर की तरह नहीं कहते कि चलो पक्का न सही तो कच्चा ही सही। क्योंकि ख़ुदा ने दुनिया को हमारे लिए ही बनाया है। यदि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों या साल-दो साल या दस-बीस साल यहाँ तक कि हज़ार-दो हज़ार साल तक। आख़िर दुनिया को इसी सिलसिला में दाख़िल होना पड़ेगा और उसी के क़दमों में गिरेगी जिसे ख़ुदा तआला ने दुनिया को सुधारने के लिए खड़ा किया है। अत: हम नहीं चाहते कि कोई कच्चा फल तोड़ लें। इसलिए प्रत्येक उस व्यक्ति को जो सिलसिला में दाख़िल होना चाहता है कहते हैं कि वह बहुत सोच-समझ ले। हाँ जब उसे समझ आ जाए तो फिर हम यह भी पसन्द नहीं करते कि वह एक मिनट की भी देर लगाए क्योंकि क्या मालूम कब (इन्सान की) जान निकल जाए।

यह पहला निर्देश है जो मैं आप को देना चाहता हूँ इसके बाद मैं जमाअत की शिक्षाएं सारांश के रूप में सुनाता हूँ। आप देखें कि क्या यही बातें आपने समझीं हैं या उनमें कुछ कमी है और आप को अधिक छान-बीन की आवश्यकता है। हमारा दावा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। इस लिहाज़ से भी कि आपकी लाई हुई किताब (क़ुर्आन करीम) के बाद कोई किताब नहीं और इस लिहाज़ से भी कि आप की लाई हुई शरीअत के बाद कोई शरीअत नहीं। लेकिन इसी बात से हम एक और परिणाम पर पहुँचते हैं और वह यह है कि जो चीज़ हमेशा रखने के लिए होती है उसमें यदि कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उसका शीघ्र की सुधार किया जाता है। उदाहरणतया वह कपड़ा जो कई साल पहनना हो उस में यदि छेद हो जाए तो शीघ्र रफ़ू कराया जाता है। लेकिन जो कपड़ा उतार कर किसी को दे देना हो उसकी चिन्ता नहीं की जाती। अत: चूँकि यह शरीअत आख़िरी शरीअत है इसलिए यह भी आवश्यक है कि जब इसमें कोई दरार पड़े शीघ्र ही ख़ुदा तआला उस की ओर ध्यान दे। क्योंकि इस शरीअत ने क़यामत (कर्मफल दिवस) तक चलना है यदि बदल जाना होता तो फिर ऐसी आवश्यकता नहीं थी। लेकिन चूँकि यह धर्म, यह किताब और यह रसूल हमेशा के लिए है इसलिए इसके सम्बन्ध में जो कमज़ोरियाँ पैदा हो जाएँ उनका दूर करना आवश्यक है। इसके अन्तर्गत हमारा विश्वास है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हमेशा, ऐसे समय कि जब धर्म में बिगाड़ फैला हो, ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे जो उसका सुधार करेंगे।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम की शान

इसके साथ ही हम यह विश्वास भी रखते हैं कि चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महानता और अध्यात्मज्ञान में समस्त नबियों से बढ़कर हैं इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शिष्यों और ग़ुलामों में से जो लोग धर्म के सुधार के लिए खड़े होंगे वह पहले नबियों की उम्मतों में से खड़े होने वालों की अपेक्षा बढ़कर होंगे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि बनी इस्राईल (यहूदी-ईसाई) में ऐसे लोग हुए हैं कि ख़ुदा उन से वार्तालाप करता था। इस उम्मत में भी ऐसा ही होगा।[1★] इससे ज्ञात होता है कि नबियों के

1★ बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी[स.] बाब मनाक़िब उमर बिन अलख़िताब।

माध्यम से ऐसे लोग पैदा होते रहे हैं। और जब हमारा यह विश्वास है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुण गुज़रे हुए सारे नबियों के गुणों से बढ़ कर हैं तो इसी कारण हमारा यह भी विश्वास है कि पहले नबियों के अनुयायियों में जो ऐसे लोग पैदा हुए जिनसे ख़ुदा तआला वार्तालाप करता था वह मुहद्दस थे। किन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयायियों में नबी भी हुआ जो अनुयायी होकर नबी था, वह नबियों में जाकर उनकी पंक्ति में खड़ा होगा। और कुछ से अपनी शान में बढ़ कर भी होगा किन्तु फिर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शिष्य ही होगा। इसका उदाहरण ऐसा है कि कॉलेज का एक लड़का चाहे छोटे स्कूलों का परीक्षक नियुक्त हो जाए किन्तु जब कॉलेज में आएगा शिष्य की हैसियत से ही आएगा।

तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह शान है कि आप के अनुपालन में एक इन्सान वह स्थान प्राप्त कर सकता है कि कुछ दूसरे नबियों से बढ़ सकता है इसका उदाहरण चाँद जैसा है जिसके सामने सितारे माँद पड़ जाते हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उदाहरण सूरज जैसा है कि आपके सामने चाँद भी माँद है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयायियों में नबी

अत: हमारा विश्वास है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयायियों में नबी हो सकते हैं। और इस ज़माने में जिस के सम्बन्ध में ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि ईमान दुनिया से उठ जाएगा और उलेमा (धार्मिक विद्वान) सबसे नीच हो जाएंगे[2]★मेरे अनुयायी (तथाकथित मुसलमान) यहूदियों के पद्-चिन्हों पर चलेंगे। यहाँ तक कि यदि यहूदियों में से किसी ने अपनी माँ से व्यभिचार किया होगा तो इनमें भी ऐसे होंगे।*[3] उस समय उनके सुधार के लिए मसीह अवतरित होगा। इसके लिए आपने नुज़ूल (उतरना) का शब्द रखा जो सम्मान के तौर पर आता है। और हमारा विश्वास है कि वह मसीह मौऊद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब हैं जो इसी गाँव (क़ादियान) में पैदा हुए और वह उस स्थान पर पहुँचने वाले थे जो नबुव्वत का स्थान है। इसलिए आपने बताया है कि मैं वह मसीह मौऊद हूँ जिसकी ख़बर दी गई थी और मैं ही वह महदी हूँ जिसके आने की सूचना दी गई है। मैं ही वह कृष्ण और ज़रतुश्त हूँ जो आख़िरी ज़माना में आने वाला था। (ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी पृष्ठ 85, 86, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22, पृष्ठ 521, 522)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न नाम

वास्तव में बात यह है कि वह सब क़ौमें जिनमें नबी आए उन को बताया गया कि आख़िरी ज़माने (कलयुग) में तुम में एक नबी आएगा और हर क़ौम ने उसका अलग-अलग नाम रखा। हमारा मानना है कि यह एक ही व्यक्ति है जिसके विभिन्न क़ौमों और धर्मों ने विभिन्न नाम रखे हैं। कारण यह है कि सब

★मिश्कात किताब उल तालीम

* तिरमिज़ी अबवाब अल ईमान बाब इफ़तराक़ हाज़िहिल उम्मत।

क़ौमों में जो ज़माना, मौऊद नबी के आने का बताया गया है वह एक ही है। फिर जो निशान बताए गए हैं वह भी लगभग मिलते-जुलते हैं। और यह निशान इस ज़माने में पूरे हो रहे हैं। इन हालात में संभव नहीं कि सैकड़ों साल की ख़बरें जो पूरी हो रही हैं और जो ख़ुदा के सच्चे और प्यारे नबियों ने दी हैं उनके अनुसार आने वाले एक दूसरे के विरोधी हों। यह हो नहीं सकता कि ख़ुदा की ओर से बताया गया हो कि फलाँ (अमुक) ज़माने में मसीह आएगा और यह भी ख़ुदा की ओर से बताया गया हो कि इस ज़माने में कृष्ण आएगा, यह भी ख़ुदा की ओर से बताया गया हो कि इसी ज़माने में ज़रतश्त आएगा और यह सब अलग-अलग अस्तित्व हों जो आकर एक दूसरे के साथ लड़ें। बात यही है कि विभिन्न भाषाओं में यह विभिन्न नाम हैं और आदमी एक ही है। चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब नबियों के गुणों से सम्पन्न थे इसलिए आपके बुरूज़ (प्रतिरूप) में भी सब गुण पाए जाएंगे। इसी कारण उसके आगमन के सम्बन्ध में सब नबी यही कहते रहे कि मैं ही आऊँगा मानो कि मेरे गुण उस आने वाले में होंगे। यह सब गुण मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में पाए गए। इसलिए आपने दावा किया कि मैं महदी हूँ, मैं मसीह हूँ, मैं कृष्ण हूँ, मैं ज़रतुश्त हूँ। अत: हमारा ईमान और विश्वास यह है कि हज़रत मसीह मौऊद सभी गुणों से सम्पन्न थे। इसलिए कि आप रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अक्स थे। और यह साफ़ बात है कि जैसा इन्सान स्वयं हो वैसा ही उसका अक्स होगा। अब जो इन्सान रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अक्स होगा उसमें वह ख़ूबियाँ होंगी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पाई जाती थीं। लेकिन यदि उसमें कोई विशिष्टता न मानी जाए तो इसका अर्थ यह होगा कि मानो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ही वह ख़ूबियाँ नहीं। देखिए यदि कोई व्यक्ति शीशे के सामने खड़ा हो और शीशे में जो उसका अक्स पड़ रहा हो उसमें नाक नज़र न आए तो ज्ञात होगा कि उस व्यक्ति के चेहरे पर ही नाक नहीं है। तो हमारा विश्वास है कि हज़रत मिर्ज़ा (ग़ुलाम अहमद) साहब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अक्स हैं और उनमें वह विशेषताएं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से पाई जाती हैं, जो आप में हैं।

अहमदियत में दाख़िल होने वाले का कर्तव्य

यह अक़ीदे (आस्थाएं) हैं जिनको मालूम करने के बाद बैअत करनी चाहिए और जब कोई इन अक़ीदों को मालूम करके बैअत करता है तो फिर उसका कर्तव्य है कि इन ज़िम्मेदारियों को भी उठाए जो बैअत करने के कारण उस पर लागू होती हैं। जो व्यक्ति फ़ौज में भरती होगा उसका कर्तव्य होगा कि लड़ाई के लिए जहाँ उसे जाना पड़े जाए। इसी तरह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में दाख़िल होने वाले का भी कर्तव्य है कि जिस तरह सहाबा किराम ने धर्म के लिए अपना माल, अपना समय, अपना देश, अपने रिश्तेदार यहाँ तक कि अपनी जान भी क़ुर्बान कर दी थी वह भी इसके लिए तैयार रहे और ऐसा नमूना बन कर दिखाए कि दुनिया देखे और जाने कि इसमें कोई ऐसी चीज़ है जो हम में नहीं है। फिर ऐसी जमाअत में दाख़िल होने वालों पर आज़माइशें भी आती हैं, कठिनाइयों का समाना होता है, कष्ट भी पहुँचते हैं, उनको सहन करना चाहिए।

दुश्मनों की शंकाएं

फिर यह बात याद रखनी चाहिए कि दुश्मन और शरारती लोग तरह-तरह के आरोप लगाया करते हैं और गुमराह करने के कई रंग अपनाते हैं। यदि इन्सान बिना छानबीन के और बिना दुश्मनों के आरोपों को समझे, जमाअत में दाख़िल हुआ हो, तो जब इस प्रकार की बातें सुनेगा तो उसे ठोकर लगेगी कि यह क्या हो गया।

हर क़ौम में नबी

उदाहरणतया एक अनभिज्ञ आदमी जब यह सुने कि हज़रत मिर्ज़ा साहब ने कृष्ण होने का दावा किया है तो कहेगा वह तो हिन्दू था, एक मुसलमान कैसे हो गया। किन्तु जब उसे यह ज्ञात होगा कि हमारा विश्वास है कि जिस तरह और क़ौमों में नबी आते रहे हैं उसी तरह हिन्दुस्तान के लोगों में भी नबी आए। उन्हीं में से एक हज़रत कृष्ण अलैहिस्सलाम थे और क़ुर्आन शरीफ़ में है कि- اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ (फ़ातिर - 25) अर्थात कोई क़ौम ऐसी नहीं जिसमें नबी न आया हो। इस आयत पर ईमान रखने वाला जब यह सुनेगा कि हिन्दुस्तान में हज़रत कृष्ण अलैहिस्स्लाम नबी आए थे तो कहेगा यदि हज़रत मिर्ज़ा साहब ने कृष्ण होने का दावा किया है तो ठीक और सही है। यदि यह दावा न करते तो झूठे होते क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में सब नबियों के गुण थे। इसलिए आपके प्रतिरूप में हज़रत कृष्ण अलैहिस्सलाम के गुण भी होने चाहिए।

मसीह मौऊद और महदी मा'हूद एक ही वजूद के दो नाम हैं

फिर मुसलमान मसीह मौऊद और महदी मा'हूद को दो अलग-अलग अस्तित्व क़रार देते हैं किन्तु वास्तव में एक ही है। जैसा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (कि तुम्हारा इमाम तुम में से ही होगा- बुख़ारी) में बताया है कि यह एक व्यक्ति के दो नाम हैं जैसा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई नाम हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियाँ

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियाँ हैं। उनके बारे में विरोधी शंकाएं पैदा करते रहते हैं। यदि पूरी जानकारी प्राप्त करके इन्सान इस सिलसिले में दाख़िल न हो तो ठोकर लगने का ख़तरा होता है। लेकिन जब पहले ही पूरी छान-बीन कर ले तो फिर चाहे कितनी ही शंकाएं पैदा की जाएं फिर ठोकर नहीं खा सकता। उदाहरणतया जब कोई व्यक्ति सूरज को देख ले तो फिर किसी समय अंधेरा हो जाने पर चाहे कोई उसे हज़ार बार कहे कि सूरज का इन्कार कर दो तो वह नहीं करेगा। हाँ यह कह देगा कि मुझे नहीं मालूम कि अन्धेरा क्यों है और इसका क्या कारण है किन्तु सूरज का मैं इन्कार नहीं कर सकता। क्योंकि सूरज के होने का मेरे पास पर्याप्त सबूत है। अत: किसी मामले के सम्बन्ध में एक तो होते हैं उसकी सच्चाई के सबूत और दूसरे शंकाएं। शंकाओं से सच्चाई के प्रमाण झूठे नहीं हो जाते। उदाहरणतया एक जगह पत्थर में से पानी निकलता हो और इन्सान उसे अपनी आँखों से देख ले तो यह नहीं कहेगा कि पानी नहीं निकलता। हाँ कह सकता है कि मुझे पता नहीं कि कैसे निकलता है। यद्यपि पत्थरों से पानी निकलने का कारण उसे ज्ञात नहीं तथापि पानी का इन्कार नहीं कर सकता। या उदाहरणतया आग है। चूना

पर पानी डालने से आग निकलती है लेकिन जिसको यह मालूम न हो कि इस तरह पानी डालने से भी आग निकलती है उसके सामने आग निकालने पर वह यह नहीं कह सकता कि यह आग नहीं कोई ठण्डी चीज़ है। बल्कि वह यही कहेगा कि चूँकि मैं आग की गर्मी को जानता हूँ और उसको हाथ लगाने से जलता है इसलिए मैं यह बिल्कुल नहीं मान सकता कि यह आग नहीं है। हाँ मुझे यह पता नहीं कि पानी डालने से कैसे आग निकलती है।

नबियों की सच्चाई परखने की कसौटी

यही तरीक़ा नबियों के पहचानने का है उनकी सच्चाई के कई सबूत होते हैं। उनके माध्यम से सच्चाई की खोज करनी चाहिए। क्योंकि यदि इस तरह न किया जाए तो कई ऐसी बातें हो सकती हैं जिनको गुमराह करने वाले लोग पेश करके धोखा दे देते हैं। लेकिन जब इन्सान सच्चाई को सच्चाई समझ कर माने तो ऐसी बातों से ठोकर नहीं खा सकता। क्योंकि पहले तो कोई शक पैदा नहीं होता और यदि पैदा हो तो इन्सान उसके निवारण का ज्ञान प्राप्त कर सकता है लेकिन सच्चाई को नहीं छोड़ता। देखिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जिस व्यक्ति ने सोच-समझ कर मानना हो और जो आपकी सच्चाई के तर्कों और दलीलों से परिचित हो उसके दिल में यदि कोई लाखों संदेह रसूले करीम की सच्चाई के बारे में डालना चाहे तो वह यही कहेगा कि मुझे उनके कारण पता नहीं या मैं उनका उत्तर नहीं दे सकता। किन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन्कार नहीं कर सकता। कोई संदेह हो वह मेरे ज्ञान की कमी का सबूत होगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे हैं क्योंकि आपकी सच्चाई के सबूत मेरे पास हैं। अब मुसलमान कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस तरह झूठे हो सकते हैं हालाँकि आपकी सच्चाई के सबूत उन्हें मालूम नहीं। वह चूँकि बाप-दादा से सुनते आए हैं इसलिए कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे हैं लेकिन हमारे पास ख़ुदा की कृपा से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के सबूत हैं। और यदि कोई आप पर आरोप लगाए तो उसका उत्तर दे सकते हैं। मगर मैं कहता हूँ यदि विरोधी के किसी आरोप का उत्तर न भी आए तो भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के सम्बन्ध में हमें शक नहीं पड़ सकता। क्योंकि हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस तरह माना है जिस तरह सूरज को मानते हैं। अत: प्रथम तो ख़ुदा की कृपा से प्रत्येक ऐतराज़ का उत्तर आता है। लेकिन यदि मान लिया जाए कि हमें किसी ऐतराज़ का उत्तर न आए तो उसके कारण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का इन्कार नहीं किया जा सकेगा। क्योंकि हमने आपको ऐसे ही नहीं माना बल्कि आपकी सच्चाई के तर्कों को देख कर माना है और पूरा पूरा विश्वास है कि यह वही तर्क हैं जो सच्चे नबी के लिए होते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा साहब की सच्चाई के तर्क (दलीलें)

इसी प्रकार हम हज़रत मिर्ज़ा साहब को मानते हैं उनकी सच्चाई के लिए नए तर्कों की आवश्यकता नहीं बल्कि उनके लिए भी वही तर्क हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और अन्य नबियों के थे। अब यदि कोई उन तर्कों के होते हुए आपको झूठा

ठहराता है तो इस तरह पहले नबी भी झूठे हो जाते हैं। लेकिन जो उन तर्कों के कारण पहले नबियों को सच्चा समझता है वह हज़रत मिर्ज़ा साहब को भी सच्चा समझेगा। जब कोई व्यक्ति उन तर्कों को जान कर और उनसे परिचित होकर आपको मानेगा तो फिर उसके दिल में कोई शक नहीं पड़ सकेगा।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू बक्र[रज़ि.] ने कैसे माना

देखिए हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को एक ही तर्क से माना है। और फिर कभी उनके दिल में आप सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के सम्बन्ध में एक पल के लिए भी शक पैदा नहीं हुआ। और वह एक तर्क यह था कि उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वआली वसल्लम को बचपन से देखा था और वह जानते थे कि आप ने कभी झूठ नहीं बोला। कभी शरारत नहीं की, कभी गन्दी और अशुद्ध बात आपके मुँह से नहीं निकली। बस यही वह जानते थे इससे अधिक न वह किसी शरीअत के जानने वाले थे कि उसके बताए हुए पैमाने से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को सच्चा समझ लिया, न किसी क़ानून के मानने वाले थे उन्हें कुछ पता नहीं था कि ख़ुदा का रसूल क्या होता है और उसकी सच्चाई के क्या तर्क होते हैं। वह केवल यह जानते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने झूठ कभी नहीं बोला। वह एक सफ़र पर गए हुए थे जब वापस आए तो रास्ते में ही किसी ने उन्हें कहा कि तुम्हारा दोस्त (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम) कहता है कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ। उन्होंने कहा क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम) यह कहता है? उसने कहा हाँ। उन्होंने कहा फिर वह झूठ नहीं बोलता और जो कुछ कहता है सच कहता है क्योंकि जब उसने कभी बन्दों पर झूठ नहीं बोला तो ख़ुदा पर क्यों झूठ बोलने लगा। जब उसने इन्सानों से कभी थोड़ी भी बेईमानी नहीं की तो अब उन से इतनी बड़ी बेईमानी किस प्रकार कर सकता कि उनकी आत्माओं को बर्बाद कर दे। केवल यह तर्क था जिसके कारण हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को माना और उसी को ख़ुदा तआला ने भी लिया है। इसलिए फ़रमाता है कि- लोगों से कह दो:

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (यूनुस-: 17)

अर्थात - मैं एक लम्बे समय तक तुम में रहा, उसको देखो। उसमें मैंने तुमसे कभी विश्वासघात नहीं किया। फिर अब मैं ख़ुदा से क्यों विश्वासघात करने लगा। यही वह तर्क था जो हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने लिया और कह दिया कि यदि वह कहता है कि ख़ुदा का रसूल हूँ तो सच्चा है और मैं मानता हूँ। इसके बाद न कभी उनके दिल में कोई संदेह पैदा हुआ और न उनकी दृढ़ता में कभी कोई कमज़ोरी आई। उन पर बड़े-बड़े संकट आए उन्हें जायदादें और देश छोड़ना पड़ा और अपने प्रियों को क़त्ल करना पड़ा। किन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की सच्चाई में कभी संदेह नहीं हुआ।

एक और सहाबी का ज़िक्र है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम का एक यहूदी से लेन-देन का मामला था। उसके सम्बन्ध में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने जो कुछ फ़रमाया उसे सुनकर सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह यही सही है जो आप फ़रमाते हैं। रसूले करीम ने कहा यह मामला

तो मेरे और उसके बीच है तुम को किस तरह पता है कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह सही है। सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह जब आप ख़ुदा के सम्बन्ध में बातें बताते हैं और हम मानते हैं कि सच्ची हैं तो अब जबकि आप एक बन्दे के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं तो यह झूठ किस प्रकार हो सकता है। इसी कारण से मैंने कहा है कि जो कुछ आप फ़रमा रहे हैं, सही है। यह सुनकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने उस सहाबी के सम्बन्ध में फ़रमाया- इसका ऐसा ईमान है कि जहाँ दो आदमियों की गवाही की आवश्यकता हो वहाँ इस एक की (गवाही) ही पर्याप्त समझी जाए।(अबू दाऊद,)

उन लोगों के दिलों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की सच्चाई क्यों इस प्रकार गड़ गई थी? और क्यों उनके दिल में कोई शक और संदेह नहीं पैदा होता था? इसका कारण यही है कि उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की सच्चाई के तर्क मालूम हो गए थे।

यह मैंने हज़रत मिर्ज़ा साहब का दावा और कुछ मोटी-मोटी बातें बताई हैं। अब आपकी सच्चाई के सम्बन्ध में बयान करता हूँ

<u>हज़रत मिर्ज़ा साहब की सच्चाई का पहला तर्क</u>

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (यूनुस - 17)

(अनुवाद- इससे पहले मैं तुम्हारे बीच एक लंबी आयु गुज़ार चुका हूँ क्या तुम फिर भी अक़्ल से काम नहीं लेते।) के पैमान को ही देखें। इस (क़ादियान) गाँव में हिन्दू और ग़ैर अहमदी रहते हैं और ऐसे लोग हैं जो हज़रत मिर्ज़ा साहब से मिलते और आपसे सम्बन्ध रखते थे। उन को सम्बोधित करके आप लिखते रहे कि बताओ मैंने कभी किसी से फ़रेब, धोखा, दग़ाबाज़ी की, किसी का माल नाजायज़ तरीक़े से लिया, किसी पर कोई अत्याचार और सख़्ती की, कभी झूठ बोला? यदि नहीं तो फिर मैं ख़ुदा पर किस तरह झूठ बोलने लग गया।

फिर ऐसे भी लोग मौजूद थे जो आपके दुश्मन थे आप से वैर रखते थे और आपको हानि पहुँचाने की ताक में रहते थे किन्तु कोई सामने खड़ा नहीं हो सका। और मुहम्मद हुसैन बटालवी जिसने आप पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया उसने भी इक़रार किया कि आपकी पहली ज़िन्दगी अच्छी थी। इससे प्रत्येक बुद्धिमान इन्सान समझ सकता है कि जब पहली ज़िन्दगी बढ़िया थी और पवित्र थी तो दावे के बाद क्या हो गया वह ज़िन्दगी क्यों बढ़िया नहीं रही।

फिर ख़ुदा तआला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक यह पैमाना बयान फ़रमाता है- وَ لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ۔ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ۔ (अलहाक़्क़: - 45-48) कि यदि यह हम पर झूठ बोलता तो हम उसे तबाह कर देते। और यह बात बुद्धि के हिसाब से भी ठीक है कि ख़ुदा पर झूठ बोलने वाले को बर्बाद होना चाहिए। क्योंकि यदि झूठ गढ़ने वाला बचा रहे तो कोई पहचान ही नहीं सकता की फलाँ ख़ुदा की ओर से ही है। देखो यदि कोई व्यक्ति दुनिया की गवर्नमेन्ट का अफ़सर होने का झूठा दावा करे तो गवर्नमेन्ट उसे गिरफ़्तार कर लेती है। फिर जो व्यक्ति

नबी होने का झूठा दावा करे उसे ख़ुदा तआल क्यों न पकड़े। क़ुर्आन करीम ने इस तर्क को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में पेश किया है और यह केवल आप ही के लिए नहीं बल्कि सामान्य है। लेकिन यदि इसको केवल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ठहराया जाए तो यह तर्क ही नहीं रहता क्योंकि यदि पहले नबुव्वत का झूठा दावा करने वाले इस तर्क के अन्तर्गत हलाक (मारे गए) होते रहे हैं तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में भी इसको पेश किया जा सकता था। लेकिन यदि पहले हलाक नहीं हुए तो फिर इस का पेश करना ठीक नहीं हो सकता। लेकिन चूँकि यह ऐसा तर्क है कि हर ज़माने में अपना प्रभाव दिखाता रहा है। इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय भी पेश किया गया। और अब हज़रत मिर्ज़ा साहब के समय में भी पेश किया जा सकता है।

अब हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद को दावे के बाद जितनी ज़िन्दगी मिली उतनी यदि झूठे नबी को भी मिल सकती है तो फिर यह आयत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का तर्क नहीं रह जाती। क्योंकि हज़रत मिर्ज़ा साहब को अपने इल्हाम (ईशवाणियाँ) प्रकाशित करने से लेकर लगभग तीस साल ज़िन्दगी प्राप्त हुई जो कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबुव्वत का दावा करने के बाद की ज़िन्दगी से अधिक है। कोई कह सकता है कि मिर्ज़ा साहब के इतने पहले के इल्हाम अब बना लिए गए हैं। किन्तु (मैं कहता हूँ) आपकी उस समय की किताबें गवर्नमेन्ट के पास मौजूद हैं और उन किताबों में इल्हाम लिखे हुए हैं। (अर्थात देखने वाले देख सकते हैं- अनुवादक)

दूसरा तर्क

फिर आपको जो इल्हाम हुए वह अत्यधिक सफ़ाई के साथ पूरे हुए और हो रहे हैं। आपको इल्हाम हुआ कि "मैं तेरी तब्लीग़ (पैग़ाम) को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा" और अब ऐसा ही हो रहा है। फिर आप को बताया गया िक तेरे माध्यम से इस्लाम का प्रसार होगा, अत: हो रहा है, ख़ुदा तआला अहमदियत को दुनिया में फैला रहा है। फिर आपको कहा गया कि क़ादियान में लोग दूर-दूर से आएंगे يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ अब उदाहरणतया आप ही इतनी दूर से आए हैं यहाँ भौतिक तौर पर कोई आकर्षण योग्य वस्तु नहीं है कि जिसे देखने के लिए कोई आए। उधर मौलवी कहते हैं कि जो आएगा वह इस्लाम से बाहर हो जाएगा और लोगों को रोकने में पूरा-पूरा ज़ोर लगा रहे हैं। बावजूद इसके हज़रत मिर्ज़ा साहब का इल्हाम लोगों को खींच-खींच कर यहाँ ला रहा है। कोई कहे यहाँ लोग सैर के तौर पर आ जाते हैं, किन्तु उन्हें यह भी तो ख़तरा होता है कि ईमान जाता रहेगा। क्योंकि उनके उलेमा ने फ़तवा दे रखा है कि जो व्यक्ति अहमदियों से मिलता-जुलता, यहाँ तक कि उनको देखता है वह इस्लाम से बाहर हो जाता है। किन्तु इसके बावजूद लोग आए और आ रहे हैं, जो कि इस बात का सबूत है कि يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ख़ुदा की ओर से इल्हाम है जो पूरा हो रहा है।

तीसरा तर्क

एक और सबूत नबियों की सच्चाई का ख़ुदा तआला यह फ़रमाता है कि हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम रसूलों को उनके विरोधियों पर ग़लबा (प्रभुत्व) देते हैं और यह ऐसी सुन्नत है जो कभी नहीं बदलती।

इस सबूत के कारण भी हज़रत मिर्ज़ा साहब की सच्चाई साबित है क्योंकि सारी दुनिया आपके मुक़ाबले पर आई और आपकी बातों को रोकना चाहा किन्तु आप का सिलसिला फैल ही गया और दिन-प्रतिदिन फैलता जा रहा है।

कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए

यह सच्चाई की ऐसी कसौटियाँ (पैमाने) हैं कि जो समस्त नबियों के लिए एक समान हैं और यह सब हज़रत मिर्ज़ा साहब के सम्बन्ध में पाए जाते हैं। उनको देख कर और समझ कर जो व्यक्ति बैअत करेगा उसे यदि किसी विषय में संदेह पैदा होगा तो ऐसी बात होगी कि वह कहेगा - मुझे इसकी जानकारी नहीं। मैं इसके सम्बन्ध में छान-बीन करूँगा न कि वह सच्चाई को छोड़ने के लिए तैयार हो जाएगा। अत: हर उस व्यक्ति का कर्तव्य है जो इस सिलसिला में दाख़िल होना चाहता है कि इस तरह समझ कर और छान-बीन करके दाख़िल हो और जब दाख़िल हो जाए तो फिर चाहे उस पर कोई मुसीबत आए उसकी परवाह न करे। अब तो वह मुसीबत और कष्ट नहीं, जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में मुसलमान होने वालों को सहन करने पड़ते थे। उस समय तो औरतों की शर्मगाहों में भाले मारे गए, तपती रेत पर लिटाया गया, ऊँटों से बाँध कर चीरा गया और भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट पहुँचाए गए जो हमारी जमाअत को नहीं पहुँचे। किन्तु ऐसा ईमान हो कि इन्सान कहे कि यदि ऐसा कोई कष्ट आए तो भी मैं दृढ़ रहूँगा और अपनी जगह से ज़रा न हटूँगा। यह विचार न करे कि अब इस प्रकार के कष्ट का ज़माना नहीं रहा इसलिए नहीं आएंगे। बल्कि यह कहे कि चाहे ज़माना ऐसा नहीं लेकिन यदि कोई ऐसा कष्ट आए तो मैं उसे सहन करने के लिए तैयार हूँ। यदि मुझे देश से निकाला जाएगा तो निकलूँगा, यदि मेरी सम्पत्ति छीन ली जाएगी तो परवाह नहीं करूँगा, यदि क़त्ल किया जाएगा तो उसके लिए भी तैयार रहूँगा। हालाँकि कम हैं लेकिन हमारी जमाअत में ऐसे उदाहरण पाए जाते हैं कि इस प्रकार के कष्टों को सहन किया गया। मालाबार में हमारी जमाअत अभी कम है, वहाँ अहमदियों की औरतों का ज़बरदस्ती दूसरी जगह निकाह कर दिया गया, जायदादें छीन लीं और भी कई जगह तरह-तरह के कष्ट पहुँचाए गए किन्तु अहमदियों ने कोई पहवाह नहीं की।

अत: जब इन्सान सच्चाई को स्वीकार करे तो इस तरह करे कि फिर उसके लिए प्रत्येक चीज़ जो उसे क़ुर्बान करनी पड़े कर दे। और जब अपने आपको इस बात के लिए तैयार पाए तब बैअत करे। इन बातों के सुनने के बाद यदि आप बैअत करना चाहते हैं तो कर सकते हैं। किन्तु फिर भी मैं यही निर्देश देता हूँ कि बहुत सोच-समझ कर बैअत करें। और इन कष्टों और मुश्किलों को सहन करने के लिए अपने आपको तैयार कर लें, जो नबियों की जमाअतों पर आती हैं।

हुज़ूर की यह सारी बातें सुन कर जब उपरोक्त व्यक्ति ने कहा कि मैं बिल्कुल सन्तुष्ट हूँ और बैअत करने के लिए तैयार हूँ तो फिर हुज़ूर ने उसकी बैअत ले ली। और उसके बाद हज़रत ने उपदेश देने और तत्कालीन ख़लीफ़ा से अधिक सम्बन्ध बढ़ाने की नसीहत दी। (अलफ़ज़ल 30/मई 1921 ई.)

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
(النحل 11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

"मोमिन की फ़िरासत (दूरदर्शिता) से डरो
क्योंकि उसका ज्ञान तक़्वा पर आधारित है"

अरबी भाषा में عَلِمَ يَعْلَمُ का अर्थ है किसी चीज़ को जानना, पहचानना, सच्चाई को समझना, निश्चित होना, महसूस करना और प्रमाणित रूप से जानना। इस्लाम ज्ञान का सबसे बड़ा वाहक और उपदेशक और ज्ञान का प्रचारक है जिसका प्रचार और प्रकाशन इक़रा शब्द से शुरू हुआ। इस्लाम की पहली शिक्षा और पवित्र कुरान की पहली आयत, जिसे अल्लाह ने अपने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रकट किया, ज्ञान से संबंधित है। (अल-अलक: 2-6) इस्लामी दृष्टिकोण से, शिक्षा एक समग्र प्रक्रिया है जो व्यक्ति को स्वयं, समाज, ब्रह्मांड, ख़ालिक़ और उनके आदेशों की पहचान कराती है, मूल रूप से, ज्ञान के दो स्रोत हैं। एक अल्लाह की वह्यी (रहस्योद्घाटन) है जो पैगंबरों के माध्यम से मनुष्यों तक पहुंची, दूसरा मानव अवलोकन और अनुभव है जिसके लिए वह अल्लाह द्वारा दी गई बुद्धि और इंद्रियों का उपयोग करता है।

पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिशन का एक उद्देश्य ज्ञान सिखाना है। सदैव ज्ञान वृद्धि के लिए प्रार्थना किया करें। (ताहा: 115) और यह कहा कर कि हे मेरे रब! मेरे ज्ञान में वृद्धि कर। विद्वानों की परिभाषा वर्णित करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है :

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ (अल-फ़ातिर: 29)

वास्तव में, अल्लाह के बंदों में से उस से वही लोग डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।

भय उस वैभव को कहा जाता है जो किसी की महानता के कारण हृदय में स्थापित हो जाए और इसका प्रभाव व्यक्ति के अंगों और समस्त भागों पर भी स्थापित हो जाए अर्थात सिर और आंखें झुक जाएँ, अर्थात ज्ञान वाले अहंकारी नहीं होते बल्कि विनम्र होते हैं। ये सबसे विवेकवान लोग अर्थात ऐसे बुद्धिमान लोग हैं जो ज़मीन और आसमान की रचना और दिन और रात के बदलाव पर ग़ौर करने के साथ-साथ हर समय अल्लाह को भी याद करते रहते हैं।

पवित्र कुरान ने कान, आँख और डिल को ज्ञान प्राप्त करने का साधन बताया है। प्यारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज्ञान प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया और कहा: "अल्लाह जिसके साथ भलाई करने का इरादा करता है तो उसे धर्म की समझ प्रदान करता है।"(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

"जो इलम हासिल करने के इरादा से कहीं जाये, तो अल्लाह उस के लिए जन्नत के रास्ते को आसान (हमवार) कर देता है।"(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

"जो कोई ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकलता है, वह लौटने तक अल्लाह के मार्ग में रहेगा।"

(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया "युक्ति की बात एक मोमिन की खोई हुई चीज़ है, जहां कहीं भी इसे पाए वह उसे प्राप्त करने का अधिक अधिकार रखता है।"

(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज्ञान की वास्तविक परिभाषा करते हुए फरमाया :

"ज्ञान और बुद्धि वह खज़ाना है जो प्रत्येक धन से श्रेष्ठ है। संसार का सारा धन नष्ट हो जाएगा, परन्तु ज्ञान और बुद्धि नष्ट नहीं होगी। (परिशिष्ट खण्ड 4 पृष्ठ 161)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल फरमाते हैं :

"ज्ञान और विवेक की खोज में प्रगति के परिणाम और लाभ, पृथ्वी और आकाश के सभी कण अल्लाह तआला के अस्तित्व के गवाह हैं।" इसलिए, जितना सांसारिक ज्ञान या आकाशीय ज्ञान प्रगति करेगा, सर्वशक्तिमान ख़ुदा का अस्तित्व और उसके गुण अधिक स्पष्ट होंगे। (हक़ीकतुल फुरकान, खंड 4, पृष्ठ 85)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फरमाते हैं :-

"पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मोमिन की फिरासत से सावधान रहें, क्योंकि उसका ज्ञान धर्मपरायणता पर आधारित है। संक्षेप में, अल्लाह तआला का प्यार और उसकी महानता आपके दिल और दिमाग में हमेशा कायम रहनी चाहिए। अगर आप इस तरह से रिसर्च करेंगे और अपने काम को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला आपको बड़ी सफलता प्रदान करेगा। इंशा अल्लाह"(भाषण 14 दिसंबर 2019, अल-फ़ज़ल 21 दिसंबर 2021 पृष्ठ 7)

हम प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह तआला हमें इन निर्देशों का यथासंभव पालन करने सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

* * *

सरमद अहमद ने 10th क्लास में 96% अंक प्राप्त किए

हमारे ज़िलई क़ाइद साहिब मजलिस खुद्दामुल अहमदिया हैदराबाद ने यह जानकारी दी है कि उनके एक खादिम सरमद अहमद s/o डॉ. जुबैर अहमद हैदराबाद ने 10th क्लास की आईसीएसई बोर्ड परीक्षा में 500 में से 481 यानी 96.2% अंक प्राप्त किए हैं माशाअल्लाह। अल्लाह तआला उनके लिए यह सफलता बहुत बहुत मुबारक करे। आमीन

सरमद अहमद ने अपनी अगली महत्वाकांक्षा के बारे में बताया कि -

"अल्लाह के फज़ल से मेरी हमेशा विज्ञान की जैविक प्रकृति की ओर विशेष रूचि रही है और शरीर विज्ञान के साथ-साथ मानव शरीर की शारीरिक रचना ने मेरी रुचि को आकर्षित किया है। इसलिए, न्यूरोसर्जन बनने और तंत्रिका विज्ञान पर बड़े पैमाने पर शोध करने की मेरी महत्वाकांक्षा ने मज़बूती से जड़ पकड़ ली है। इसलिए, अपने भविष्य के प्रयासों में मैं विज्ञान - भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान (Science - Physics, Chemistry and Biology) का अध्ययन करने की योजना बना रहा हूँ।" हमारी दुआ है कि अल्लाह उन्हें उनके उद्देश्य में सफल करे आमीन।

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

1.किस बीमारी के इलाज के लिए संकल्प प्रोजेक्ट बनाया गया था

उत्तर-एचआईवी

2.पौधे के किस भाग को केसर के रूप में प्रयोग किया जाता है

उत्तर-पुंकेसर

3.मटर पौधा क्या है

उत्तर- शाक

4.शक्कर गन्ने के अलावा किस और अन्य फसल से प्राप्त की जाती है

उत्तर-चुकंदर से

5.सेब आड़ू स्ट्रॉबेरी और अखरोट के फल वृक्ष किस जलवायु से जुड़े हुए हैं

उत्तर-शीतोष्ण कटिबंध

6. किस खाद्यान्न में सबसे ज्यादा कार्बोहाइड्रेट की मात्रा होती है

उत्तर-मक्का

7. एक मनुष्य को कितनी मात्रा में आयोडीन की अवश्यकता होती है?

उत्तर-80 ग्राम प्रतिदिन

8.खून में प्रोटीन की मात्रा कितनी होती है?

उत्तर-आठ परसेंट

9.रासायनिक रूप से इंसुलेट क्या होता है?

उत्तर-प्रोटीन

10.मानव शरीर में विटामिन ए कहां इकट्ठा होता है?

उत्तर- लीवर में

11.ट्रेकोमा रोग किस से होता है?

उत्तर-वायरस से

12.जयपुरी पैर का आविष्कार किसके द्वारा किया गया था?

उत्तर-डॉक्टर सेठी द्वारा

13.जिन बच्चों को सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता है वह किस बीमारी के रोगी होते हैं?

उत्तर-रिकेट्स के

14.पीतल का निर्माण किस से किया जाता है?

उत्तर- तांबा और जिंक

15. लोहे को जंग लगने के लिए किस की आवश्यकता होती है

उत्तर- ऑक्सीजन एवं पानी।